लोगों ने क़ुरआन के बारे में क्या कहा (2 का भाग 1)

रेटिंग:

विवरण:

श्रेणी: लेख इस्लाम के फायदे इस्लाम, मुहम्मद और क़ुरआन के बारे में दूसरे लोग क्या कहते हैं

द्वारा: iiie.net

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

मानवता को केवल दो माध्यमों से ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है: पहला ईश्वर का वचन, दूसरा पैगंबर जिन्हें ईश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्य तक पहुंचाने के लिए चुना था। ये दोनों चीजें हमेशा साथ-साथ चलती रही हैं और इन दोनों में से किसी एक की उपेक्षा करके ईश्वर की इच्छा को जानने का प्रयास हमेशा भ्रामक रहा है। हिंदुओं ने अपने पैगम्बरों की उपेक्षा की और अपनी किताबों पर पूरा ध्यान दिया जो केवल शब्द पहेली साबित हुई जो उन्होंने अंततः खो दी। इसी तरह, ईसाइयों ने, ईश्वर की पुस्तक की पूर्ण अवहेलना करते हुए, मसीह को महत्व दिया और इस तरह न केवल उन्हें देवत्व तक पहुंचाया, बल्कि बाइबिल में निहित ????? (एकेश्वरवाद) का सार भी खो दिया।

तथ्य की बात करें तो, क़ुरआन से पहले आये मुख्य ग्रंथ, यानी ओल्ड टेस्टामेंट और इंजील, पैगंबरों के जाने के लंबे समय बाद पुस्तक के रूप में आए और वह भी अनुवाद में। ऐसा इसलिए था क्योंकि मूसा और यीशु के अनुयायियों ने अपने पैगंबरों के जीवन के दौरान इन रहस्योद्घाटन को संरक्षित करने के लिए कोई महत्वपूर्ण प्रयास नहीं किये थे। बल्कि, वे उनकी मृत्यु के बहुत बाद में लिखे गए थे। इस प्रकार, अब हमारे पास बाइबिल (पुराने और साथ ही नया नियम) के रूप में मूल रहस्योद्घाटन का व्यक्तिगत अनुवाद है जिसमें उक्त पैगंबरों के अनुयायियों द्वारा किए गए जोड़ और विलोपन शामिल हैं। इसके विपरीत, अंतिम पुस्तक क़ुरआन अभी भी अपने प्राचीन रूप में ही है। ईश्वर ने स्वयं इसके संरक्षण की गारंटी दी और पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) के जीवनकाल के दौरान पूरा ताड़ के पत्तों, चर्मपत्र, हड्डियों आदि के अलग-अलग टुकड़ों पर क़ुरआन लिखा गया था। इसके

अलावा, 100,000 से अधिक साथी जिन्होंने या तो पूरा क़ुरआन या उसके कुछ हिस्सों को याद किया। पैगंबर खुद इसे साल में एक बार ईश्वर के स्वर्गदूत जिब्राइल को सुनाते थे और जिस वर्ष उनकी मृत्यु हुई, उन्होंने इसे 2 बार सुनाया। पहले खलीफा अबू बक्र ने पैगंबर के मुंशी जैद इब्न थाबित को एक खंड में पूरे क़ुरआन का संग्रह सौंपा। यह मात्रा अबू बक्र के पास उनकी मृत्यु तक थी। फिर यह दूसरे खलीफा उमर के साथ था और उसके बाद यह पैगंबर की पत्नी हफ्सा के पास आया। इस मूल प्रति से तीसरे खलीफा उस्मान ने कई अन्य प्रतियां तैयार कीं और उन्हें विभिन्न मुस्लिम क्षेत्रों में भेज दिया।

क़ुरआन को इतनी सावधानी से संरक्षित किया गया है कि यह अंत समय तक मानवता के लिए मार्गदर्शन की पुस्तक रहेगी। यही कारण है कि यह केवल उन अरब के लोगों को संबोधित नहीं करता है जिनकी भाषा में यह आया था। यह लोगों को मनुष्य के रूप में संबोधित करता है:

"ऐ मनुष्यों, तुम्हें तुम्हारे उदार रब (ईश्वर) के बारे में किस बात ने धोखा दिया है।"

क़ुरआन की शिक्षाओं की व्यावहारिकता पैगंबर मुहम्मद और अच्छे मुसलमानों के सभी युगों के उदाहरणों से स्थापित होती है। क़ुरआन का विशिष्ट दृष्टिकोण यह है कि इसके निर्देश मनुष्य के सामान्य कल्याण के उद्देश्य से हैं और उसकी पहुंच के भीतर की संभावनाओं पर आधारित हैं। अपने सभी आयामों में क़ुरआन का ज्ञान निर्णायक है। यह न तो शरीर की निंदा करता है और न ही पीड़ा देता है और न ही यह आत्मा की उपेक्षा करता है। यह ईश्वर का मानवीकरण नहीं करता है और न ही यह मनुष्य को देवता बनाता है। जिसकी जगह जहां है, उसे सावधानी से वहीं रखा गया है।

वास्तव में जो विद्वान यह आरोप लगाते हैं कि मुहम्मद क़ुरआन के लेखक थे, वे कुछ ऐसा दावा करते हैं जो मानवीय रूप से असंभव है। क्या ईसा की छठी शताब्दी का कोई व्यक्ति ऐसे वैज्ञानिक सत्य बोल सकता है जो क़ुरआन में है? क्या वह गर्भाशय के अंदर भ्रूण के विकास का इतना सटीक वर्णन कर सकता है जितना हम आधुनिक विज्ञान में पाते हैं?

दूसरा, क्या यह विश्वास करना तर्कसंगत है कि मुहम्मद, "जो चालीस वर्ष की आयु तक केवल अपनी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के लिए जाने जाते थे" ने अचानक साहित्यिक योग्यता में एक अतुलनीय पुस्तक का लेखन शुरू किया और इसके समकक्ष अरब कवियों की पूरी सेना और उच्चतम क्षमता के वक्ता कुछ भी नही लिख सके? अंत में, क्या यह तर्कसंगत है कि मुहम्मद, जो अपने समाज में अल-अमीन (भरोसेमंद) के रूप में जाने जाते थे और अभी भी जिनकी ईमानदारी और अखंडता के लिए गैर-मुस्लिम विद्वानों द्वारा प्रशंसा की जाती है, एक झूठे दावे के साथ सामने आए और हजारों पुरुषों को प्रशिक्षित करने में सक्षम थे, जो पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ मानव समाज की स्थापना के लिए सत्यनिष्ठ पुरुष थे?

निश्चय ही, सत्य का कोई भी ईमानदार और निष्पक्ष खोजकर्ता यह विश्वास करेगा कि क़ुरआन ईश्वर की प्रकट पुस्तक है।

उनके द्वारा कही गई सभी बातों से सहमत हुए बिना, हम यहां क़ुरआन के बारे में महत्वपूर्ण गैर-मुस्लिम विद्वानों की कुछ राय प्रस्तुत करते हैं। पाठक आसानी से देख सकते हैं कि क़ुरआन के संबंध में आधुनिक दुनिया कैसे वास्तविकता के करीब आ रही है। हम सभी खुले विचारों वाले विद्वानों से अपील करते हैं कि उपरोक्त बिंदुओं के प्रकाश में क़ुरआन का अध्ययन करें। हमें यकीन है कि ऐसा कोई भी प्रयास पाठक को यह विश्वास दिलाएगा कि क़ुरआन कभी किसी इंसान द्वारा नहीं लिखा जा सकता है।

गोएथे ने टी.पी. ह्यूजेस डिक्शनरी ऑफ़ इस्लाम मे उद्धृत किया, पृष्ठ 526:

"हालांकि अक्सर जब हम क़ुरआन को पहली बार पढ़ना शुरू करते हैं तो हमें अच्छा नहीं लगता लेकिन यह जल्द ही आकर्षित करता है, चकित करता है, और अंत में हमारी श्रद्धा को बढ़ाता है... इसकी शैली, इसकी सामग्री और उद्देश्य के अनुसार कठोर और भव्य है, भयानक - हमेशा और वास्तव में उदात्त - इस प्रकार यह पुस्तक सभी युगों में सबसे शक्तिशाली प्रभाव डालती रहेगी।"

मौरिस बुकेल, द क़ुरआन एंड मॉडर्न साइंस, 19812, पृष्ठ 18:

"आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में क़ुरआन की एक पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ परीक्षा, हमें इन दोनों के बीच के संबंध को पहचानने में मदद करती है, जैसा कि पहले ही बार-बार उल्लेख किया गया है, यह हमें मोहम्मद के समय के एक व्यक्ति के लिए अपने समय में ज्ञान की स्थिति के कारण इस तरह के बयानों के लेखक होने के लिए काफी अकल्पनीय लगता है। इस तरह के विचार क़ुरआन के रहस्योद्घाटन को अपना विशिष्ट स्थान देने का हिस्सा हैं, और निष्पक्ष वैज्ञानिक को एक स्पष्टीकरण प्रदान करने में असमर्थता को स्वीकार करने के लिए मजबूर करते हैं जो पूरी तरह से भौतिकवादी तर्क पर निर्भर करता है।"

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/index.php/hi/articles/3362

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।